अध्याय – 2

संबंधित साहित्य की समीक्षा

2.1 प्रस्तावना

साहित्य की समीक्षा प्रत्येक वैज्ञानिक अनुसंधान की प्रक्रिया में एक महत्वपूर्ण कदम है। साहित्य समीक्षा एक कठिन परिश्रम का कार्य है। प्रत्येक प्रकार के वैज्ञानिक अनुसंधान में चाहे भौतिक विज्ञान के क्षेत्र में अथवा सामाजिक विज्ञान के क्षेत्र में साहित्य की समीक्षा एक अनिवार्य और प्रारंभिक कदम है। क्षेत्रीय अध्ययन में जहाँ उपलब्ध उपकरणों तथा नवीन स्वनिर्मित उपकरणों का उपयोग तथा प्रदत्त संकलन का कार्य होता है। समस्या से संबंधित साहित्य की समीक्षा अनुसंधान का प्राथमिक आधार तथा अनुसंधान के गुणात्मक निर्धारण में एक महत्वपूर्ण कारक है। समस्या से संबंधित साहित्य का अध्ययन करना आवश्यक है। जिससे किसी कार्य की पुनरावृत्ति नहीं हो सकती एवं अनुसंधानकर्ता को अपने अनुसंधान के विधान की रचना के संबंध में अर्न्तदृष्टि प्राप्त हो सकती है। पूर्व अनुसंधानों के अध्ययन से अन्य संबंधित नवीन समस्याओं का पता लगता है। अर्थात किसी भी विषय क्षेत्र का साहित्य ही उस आधारशिला के सामान है। जिस पर सारे भविष्य के कार्य आधारित होते है। इस प्रकार साहित्य के पुनरावलोकन का अनुसंधान में बहुत महत्व है। प्रस्तुत समस्या से संबंधित साहित्य इस प्रकार है।

2.2 संबंधित साहित्य

बुकर एट अल (1997) संख्यात्मक का अर्थ है संवाद करना रोजमर्रा के उपयोग में गणितीय समझ बनाते समय। यह अन्वेषण करने की क्षमता है और समस्याओं को हल करने के लिए विभिन्न तरीकों का उपयोग करके तार्किक रूप से परिकल्पना करें।

रोज और मेयर (2002) शिक्षा और कौशल विभाग (डीईएस) ने संचार के कई रूपों को पढ़ने, समझने और सराहना करने की क्षमता के रूप में साक्षरता और संख्यात्मकता का दस्तावेजीकरण किया। इसमें बोली जाने वाली और लिखित भाषा (डीईएस, 2011) शामिल है। इससे पता चलता है कि साक्षरता शब्द में कई तथ्य और साक्षरताएँ हैं ।

बोडार्ड और जोन्स (2003) इतिहास से पता चला है कि यदि लोग अपना नाम लिखने में सक्षम हैं, तो उन्हें साक्षर माना जाता है। धीरे–धीरे लोगों को साक्षर माने जाने वाले पढ़ने

और लिखने में सक्षम होने की आवश्यकता थी, फिर भी यूनेस्को ने दस्तावेज किया कि साक्षर लोगों ने 4 से 5 साल की स्कूली शिक्षा में भाग लिया होगा।

शेफर्स (2005) के अध्ययन में पाया गया कि परिवार साक्षरता और संख्यात्मकता कार्यक्रम के शुभारंभ से पहले, मंत्रालय शिक्षा विभाग में 13 क्षेत्र में एक निम्न प्राथमिक और सामुदायिक कार्यक्रम पर एक सर्वेक्षण किया। उन्होनें कहा कि दृढ़–विश्वास यानि समर्थन करने के लिए सर्वेक्षण किया गया था। नामीबिया में इस सर्वेक्षण का मुख्य उद्देश्य माता–पिता को समर्थन देना है ताकि वे अपने बच्चों को शुरूआती 5 साल की शिक्षा के लिए मार्गदर्शन कर सकें।

मैग्नसन, रूहम और वाल्डफोगेल (2007) के एक अध्ययन मे बताया गया है कि बच्चों के साक्षरता और संख्यात्मक गतिविधियों में व्यसतता ने सकारात्मक स्कूल परिणाम दिखाए; तुलना उन लोागों से की जो साक्षरता गतिविधियों में संलग्न नहीं है। उनके अध्ययन में यह भी पाया गया कि प्री–किंडरगार्टन गतिविधियों से पढ़ने और गणितीय कौशल में सुधार होता है।

जो. किम और उमाहायारा (2010) यह लेख शिक्षा के अंतिम लक्ष्य के रूप में एशिया प्रान्त क्षेत्र की प्रगति को दर्शाता है। ईसीसीई का समग्र लक्ष्य देखभाल और स्वच्छता सहित जन्म से 8 वर्ष तक शिक्षा के माध्यम से बच्चों के पूर्ण विकास को बढ़ावा देना है। प्रारंभिक प्रोत्साहनो का विकास और माता–पिता एवं परिवारों के लिए समर्थन। पिछले एकदशक में क्षेत्रीय स्तर पर प्री–स्कूल नामांकन में वृद्वि हुई है, लेकिन अन्य देशों के बीच बड़े अन्तर होते रहे हैं। और एशियाई प्रान्त देश जन्म से सभी बच्चों के लिए समान अवसर प्रदान नहीं कर पाये हैं। दस्तावेज उन देशों के उदाहरणों पर प्रकाश डालता है जिसका उद्देश्य ईसीसीई की गुणवत्ता का विस्तार और सुधार करना और स्थानीय चुनौतियों को उजागर करना है। क्षेत्रों के बीच समन्वय, लोगों को 3 साल तक सबसे अधिक हाशिए पर रखने के लिए मजबूर करता है। ईसीसीई में निवेश करें सभी बच्चों के लिए गुणवत्ता सुनिश्चित करने के लिए गुणवत्ता मानक निर्धारित करें।

कैनेडी एट अल (2012) साक्षरता की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि इसके तीन प्रतिमान दर्शाती है, संज्ञानात्मक और सामाजिक, सांस्कृतिक दृष्टिकोंण के लिए व्यवहारवादी। सभी पहलुओं में, पढ़ने के कौशल पर सबसे पहले जोर दिया जाता है क्योंकि इसे समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण से, माना और लिया जाता है। दूसरा यह बच्चों की प्रेरणा, जुड़ाव और

आत्मप्रभावकारिता पर जोर देता है। वहाँ विशिष्ट घटकों अर्थात शब्दावली के साथ साक्षरता विकास के अन्य तीन चरण हैं विकास, शब्द पहचान, सटीकता , प्रवाह, पढ़ने की समझ और लेखन ।

चोपड़ा (2012) अध्ययन से यह स्पष्ट है कि पाँच अलग–अलग प्रारंभिक बचपन कार्यक्रमों में भाग लेने वाले बच्चों के लिए विभिन्न प्रावधान उपलब्ध हैं। इन कार्यक्रमो की भिन्नता को एक शीर्ष निकाय की अनुपस्थिति के लिए जिम्मेदार ठहराया जा सकता है, जो प्रारंभिक बचपन कार्यक्रम के विभिन्न पहलुओं की निगरानी करता है। इसके अलावा, "प्रारंभिक बचपन की शिक्षा" वास्तव में क्या है और छोटे बच्चों के लिए एक उपयुक्त कार्यक्रम की योजना कैसे बनाई जाए, इस पर सहमति की कमी के कारण भिन्नता होती है, क्योंकि अधिकांश कार्यक्रम योजना का और कार्यान्वयनकर्ता प्रारंभिक बचपन की शिक्षा के क्षेत्र में प्रशिक्षित नहीं होते हैं और बाल विकास कार्यक्रम के प्रावधानों में बदलाव भी स्पष्ट थे, जैसे कि ईसीईआरएस उपकरण द्वारा मापा गया था। यह फिर से प्रदान की जाने वाली प्रारंभिक बचपन की शिक्षा की गुणवत्ता और विकास पर आम सहमति की कमी की ओर इशारा करता है। विभिन्न पाठ्यचर्या उपगामो और बच्चों को प्रदान किये गये अनुभवों में से आम सहमति की कमी देखी गई है। पाठ्यचर्या के लक्ष्य और उद्देश्यों में इस भिन्नता का प्रभाव, साथ ही पाठ्यचर्या की योजना बनाने और उसे लागू करने के तरीके, बच्चों के विकास और प्रारंभिक स्कूल के प्रदर्शन पर परिलक्षित होते हैं।

रिपोर्ट–1 ईसीसीई (2013) समग्र रिपोर्ट से भारत जैसे देश में सीखने के प्रतिफल (एलओ) विकास के अवसर की आवश्यकता की पुष्टि करती है जो खाद्य, स्वास्थ्य और पूर्व स्कूली शिक्षा के मामले में अन्य देशों से बहुत पीछे है। इस संदर्भ में उन्होनें समेकित बाल विकास योजना (आईसीडीएस) सुधारों को लागू करने के लिए पर्याप्त साधनों की कमी पर जोर दिया। जिससे सेवाओं की गुणवत्ता और प्रभावशीलता में सुधार हुआ। स्कूली शिक्षा और समेकित बाल विकास योजना (आईसीडीएस) के भीतर लागू किये जाने वाले नियमो और नीतियों की कमी के कारण एक तरफ विशेष रूप से दुखःद मिशनो की स्थिति को भी दर्शाती है। साक्षरता में विषय हस्तक्षेप की बड़ी माँग के लिए निजी सबक की आवश्यकता है। रिपोर्ट विभिन्न दिशात्मक विशेषताओं में अनियमित वृद्वि की चेतावनी देती है। जो सामाजिक घटनाओं तक पहुँच मे असामानता को बढ़ा सकती है।